University in News on 06 May 2024

AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

स्नातक में नहीं होंगे स्ट्रीम मुक्त दाखिले

पीजी में स्ट्रीम की बाध्यता नहीं, बीए डिग्री वाले भी कर सकेंगे एमएससी

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के परास्नातक पाठ्यक्रम में नई शिक्षा नीति के तहत किसी भी स्ट्रीम के विद्यार्थी किसी भी पाठ्यक्रम में दाखिला ले सकते हैं। लेकिन यह सुविधा स्नातक में उपलब्ध नहीं होगी। स्नातक में इस साल भी न्यूनतम अंक के साथ ही 12वीं में संबंधित विषय की अनिवार्यता का पालन करना पड़ेगा।

नई शिक्षा नीति-2020 में विद्यार्थियों को पढ़ने की ज्यादा आजादी दी गई है। इसके तहत विद्यार्थियों को किसी भी स्तर पर कोर्स छोड़ने की सुविधा मिलती है।

हर स्तर पर विद्यार्थी को सर्टिफिकेट, डिप्लोमा या फिर डिग्री की उपाधि मिल जाती है। इसी तरह परास्नातक पाठ्यक्रम में दाखिला लेने के लिए इस साल से स्ट्रीम की अनिवार्यता समाप्त की गई है। इसके तहत बीए डिग्री वाला विद्यार्थी भी एमएससी में दाखिला ले सकता है। वहीं स्नातक स्तर पर इस साल यह प्रावधान नहीं है।

इसके तहत बीएससी मैथ्स में दाखिला लेने के लिए 12वीं में विज्ञान वर्ग के साथ गणित, बीएससी बायो के लिए विज्ञान के साथ 12वीं में बायो और बीकॉम के लिए कॉमर्स जरूरी है।

न्यूनतम अंक व विषय की रहेगी अनिवार्यता

अगले साल से स्नातक में भी होगा बदलाव

- लविवि की डीन एकेडमिक्स प्रो. गीतांजलि मिश्रा के मुताबिक, इस साल परास्नातक पाठ्यक्रम के आर्डिनेंस में बदलाव कर दिया गया है। स्नातक पाठ्यक्रम के आर्डिनेंस में अगले साल बदलाव किया जाएगा। इसके बाद स्नातक के दाखिले में भी स्ट्रीम संबंधी अनिवार्यता नहीं रहेगी।

लविवि में कोर्स के हिसाब से बदलता है न्यूनतम अंकों का गणित

- लविवि में स्नातक के विभिन्न पाठ्यक्रमों में दाखिले के लिए न्यूनतम अंकों की अनिवार्यता भी अलग-अलग है। इसके तहत बीए में दाखिले के लिए 12वीं में सामान्य और ओबीसी वर्ग के अभ्यर्थियों को न्यूनतम 40 फीसदी और एससी-एसटी वर्ग के अभ्यर्थियों को न्यूनतम 33 फीसदी अंक लाना अनिवार्य है। बीजेएमसी में सामान्य और ओबीसी के लिए 50 और एससी-एसटी अभ्यर्थियों के लिए न्यूनतम 45 फीसदी अंक की अनिवार्यता है। बीएससी, बीवोक, बीकॉम में सामान्य और ओबीसी वर्ग के लिए 40 और एससी-एसटी वर्ग के लिए 33 फीसदी की अंक की अनिवार्यता है। एलएलबी में सामान्य के लिए 45, ओबीसी के लिए 42 और एससी-एसटी वर्ग के लिए 40 फीसदी अंक लाने पर ही दाखिला मिल सकेगा। बीएससी एग्रीकल्चर के लिए सामान्य और ओबीसी अभ्यर्थियों के लिए 45 और एससी-एसटी वर्ग के अभ्यर्थियों के लिए 40 फीसदी व बीबीए में सामान्य तथा ओबीसी वर्ग के लिए 50 तथा एससी-एसटी वर्ग के अभ्यर्थियों के लिए न्यूनतम अंकों की सीमा 45 फीसदी तय की गई है।

i-NEXT PAGE 6

इस माह के अंत में पीजी के एग्जाम!

लखनऊ विश्वविद्यालय में स्नातक सम सेमेस्टर परीक्षाएं होने के बाद अब प्रशासन मई के अंतिम सप्ताह से परास्नातक दूसरे व चौथे सेमेस्टर की परीक्षाएं कराने की तैयारी कर रहा है. अगले सप्ताह से विभिन्न विषयों के परीक्षा कार्यक्रम जारी करने योजना है. इन परीक्षाओं में एलयू से संबद्ध सभी पांच जिलों में 50 हजार स्टूडेंट्स शामिल होंगे. एलयू ने 30 अप्रैल से स्नातक सम सेमेस्टर की परीक्षाएं शुरू की थी. उसके बाद एलएलबी, बीटेक सहित विभिन्न पाठ्यक्रमों की परीक्षाओं की भी समय सारिणी जारी की गई है. परीक्षा विभाग के अनुसार परास्नातक सम सेमेस्टर परीक्षाएं मई के अंतिम सप्ताह से शुरू कराने की योजना है. इसकी तैयारी चल रही है. अगले सप्ताह से परीक्षा कार्यक्रम जारी होंगे.

JAGRAN CITY PAGE III

लवि : इस माह के अंत में पीजी की परीक्षाएं शुरू करने की तैयारी

जासं●लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय में स्नातक सम सेमेस्टर परीक्षाएं होने के बाद अब प्रशासन मई के अंतिम सप्ताह से परास्नातक दूसरे व चौथे सेमेस्टर की परीक्षाएं कराने की तैयारी कर रहा है। अगले सप्ताह से विभिन्न विषयों के परीक्षा कार्यक्रम जारी करने योजना है। इन परीक्षाओं में लवि से सम्बद्ध सभी पांच जिलों में 50 हजार छात्र-छात्राएं शामिल होंगी।

लवि ने 30 अप्रैल से स्नातक सम सेमेस्टर की परीक्षाएं शुरू की थीं। उसके बाद एल.एल.बी, बी.टेक सहित विभिन्न पाठ्यक्रमों की परीक्षाओं की भी समय सारिणी जारी की गई है। परीक्षा विभाग के अनुसार परास्नातक सम सेमेस्टर परीक्षाएं मई के अंतिम सप्ताह से शुरू कराने की योजना है। इसकी तैयारी चल रही है। अगले सप्ताह से परीक्षा कार्यक्रम जारी होंगे। कोशिश है कि 30 मई से 20 जून के बीच परीक्षाएं पूरी करा ली जाएं, ताकि समय से मूल्यांकन कराकर परीक्षा परिणाम घोषित किए जा सकें।

THE PIONEER PAGE 2

Music therapy for LU students; MoU signed

PNS ■ LUCKNOW

The Institute of Women's Studies at Lucknow University and the Music Therapy Cell and Research Centre at Kashi Vidyapith, Varanasi, have announced the signing of a memorandum of understanding (MoU) for academic exchange. This partnership represents a significant step towards fostering academic collaboration and enhancing the educational experience for students and faculty at both institutions.

Under this MoU, the Music Therapy Cell at Kashi Vidyapith will conduct specialised music therapy sessions for students and faculty members at LU. These sessions are designed to promote mental health and emotional well-being through the therapeutic use of music. Concurrently, the Institute of Women's Studies will facilitate gender sensitisation sessions for students at Kashi Vidyapith, Varanasi. The MoU will remain in effect for one year with the potential for renewal to continue this fruitful partnership.

SWATANTRA BHARAT PAGE 4

संगीत ने नकारात्मक चिंतन के स्तर को किया कम : डॉ. तुषार

स्वतंत्र भारत संवाददाता। लखनऊ विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग ने संगीत, संज्ञान और भावनाः उपचारात्मक निहितार्थ शीर्षक से एक व्याख्यान आयोजित किया जिसमें दो प्रतिष्ठित वक्ता शामिल हुए। डॉ.दुर्गेश के.उपाध्याय, एक प्रमाणित संगीत चिकित्सक और एम.जी.काशी विद्यापीठ, वाराणसी में संगीत चिकित्सा सेल और अनुसंधान केंद्र के समन्वयक और डॉ. तुषार सिंह, बीएचयू, वाराणसी में मनोविज्ञान विभाग में सहायक प्रोफेसर (वरिष्ठ ग्रेड) और राष्ट्रीय मनोविज्ञान अकादमी (एनएओपी) के निर्वाचित अध्यक्ष रहे। लविवि के मनोविज्ञान विभाग की प्रमुख डॉ.अर्चना शुक्ला ने इस ज्ञानवर्धक सत्र की संयोजक के रूप में कार्य किया और सत्र में 85 प्रतिभागी थे। सत्र की शुरुआत डॉ.तुषार सिंह के व्याख्यान से हुई। उन्होंने अपने व्याख्यान की शुरुआत संगीत के पूर्वी और पश्चिमी दृष्टिकोण और इसकी उपचारात्मक प्रकृति के अंतर से की। उन्होंने संगीत को मानवीय अनुभूति और भावनाओं से जोड़ा और बताया कि किस तरह मूड पर निर्भर संगीत की पसंद हमारे व्यवहार को प्रभावित करती है। उन्होंने कहा कि संगीत जीवन की आत्मा है।

लविवि में मनोविज्ञान विभाग का व्याख्यान सम्पन्न

इसके अलावा, उन्होंने डिप्रेशन के क्षेत्र में अपने शोध कार्य के बारे में बात की और इसके परिणाम साझा किए। उन्होंने दावा किया कि रोगियों में डिप्रेशन काफी कम हुआ और कैसे संगीत ने नकारात्मक चिंतन के स्तर को कम किया। उन्होंने रागों के महत्व पर भी ध्यान केंद्रित किया। संगीत में ऐसे गुण होते हैं जो हमारे मूड को बदल सकते हैं और संगीत की लाभकारी प्रकृति के लिए सहायक साक्ष्य हैं। उन्होंने लोगों को सही तरह के संगीत के बारे में मनोवैज्ञानिक शिक्षा देने पर जोर दिया जोकि हमारे मूड के अनुरूप हो। सत्र के दूसरे वक्ता डॉ.दुर्गेश उपाध्याय थे। उन्होंने सार्थक संगीत जुड़ाव और क्लाइंट की अपनी संगीत पसंद के आधार पर अनुकूलित दृष्टिकोण के बारे में बात की। उन्होंने थेरेपी में संगीत और थेरेपी के रूप में संगीत में भी अंतर किया। मानसिक स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता की कमी को दूर करने के लिए संगीत चिकित्सा एक उपकरण के रूप में काम कर सकती है। उन्होंने दर्शकों के सामने संगीत चिकित्सा का लाइव प्रदर्शन भी किया। कैसे एक ही राग पर आधारित विभिन्न रचनाएं अलग-अलग अभिव्यक्ति या भावनात्मक प्रभाव डालती हैं। अनुकूलित संगीत चिकित्सा रोगियों के साथ अधिक जुड़ सकती है। उन्होंने प्रतिभागियों के साथ एक इंटरैक्टिव गतिविधि आयोजित की और संगीत चिकित्सा की प्रक्रिया का प्रदर्शन किया। सत्र के अंत में संगीत की चिकित्सीय क्षमता पर चर्चा की गई। वक्ताओं ने संगीत, अनुभूति और भावनाओं के बीच संबंधों पर चर्चा की और बताया कि संगीत के साथ जुड़ना हमारे भावनात्मक विनियमन के लिए एक शक्तिशाली उपकरण कैसे हो सकता है। एक विशेष आकर्षण डॉ.दुर्गेश उपाध्याय द्वारा अवसाद के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन की गई संगीत चिकित्सा की खोज थी। कार्यक्रम का समापन डॉ.मेघा सिंह द्वारा धन्यवाद ज्ञापन तथा डॉ.अर्चना शुक्ला द्वारा समापन टिप्पणी के साथ हुआ।

लविवि व काशी विद्यापीठ के बीच शैक्षणिक एमओयू

स्वतंत्र भारत संवाददाता, लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के महिला अध्ययन संस्थान और काशी विद्यापीठ वाराणसी के संगीत चिकित्सा कोशिका और अनुसंधान केंद्र, कुलपति प्रो.आलोक कुमार राय और कला संकाय के डीन प्रो.अरविंद अवस्थी के कुशल नेतृत्व और मार्गदर्शन में शैक्षणिक आदान-प्रदान के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने की घोषणा करने में बहुत खुशी हो रही है। यह साझेदारी दोनों संस्थानों में शैक्षणिक सहयोग और शैक्षणिक अनुभव को बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस एमओयू के तहत काशी विद्यापीठ में संगीत चिकित्सा कोशिका लविवि के छात्रों और फैकल्टी सदस्यों के लिए विशेष संगीत चिकित्सा सत्र आयोजित करेगी। ये सत्र संगीत के चिकित्सीय उपयोग के माध्यम से मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक कल्याण को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। इसी समय लविवि के महिला अध्ययन संस्थान काशी विद्यापीठ, वाराणसी के छात्रों के लिए लिंग संवेदीकरण सत्रों की सुविधा प्रदान करेगा। ये सत्र लिंग मुद्दों के बारे में शिक्षा देने और जागरूकता बढ़ाने के लिए हैं। जिससे एक अधिक समावेशी और समान शैक्षणिक वातावरण को बढ़ावा मिलता है। कुलपति ने कहा कि हम इस सहयोग को लेकर उत्साहित हैं, यह न केवल हमें मूल्यवान संसाधनों को साझा करने की अनुमति देता है,बल्कि दोनों संस्थानों में हेलिस्टिक शैक्षणिक प्रस्तावों को भी बढ़ाता है। डॉ.मानिनि श्रीवास्तव,लविवि के महिला अध्ययन संस्थान की समन्वयक ने कहा कि यह साझेदारी हमारे छात्रों और फैकल्टी के व्यक्तिगत और पेशेवर विकास के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रमाण है। काशी विद्यापीठ में संगीत थेरेपी सेल के समन्वयक डॉ.दुर्गेश उपाध्याय ने इस पहल के बारे में उत्साह व्यक्त किया। मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में संगीत चिकित्सा के सिद्ध लाभ हैं और हम लविवि में चिकित्सा के इस अभिनव रूप को लाने के लिए रोमांचित हैं। हमारा मानना है कि यह आदान-प्रदान हमारे संस्थानों के बीच शैक्षणिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए नए द्वार खोलेगा। इस उपयोगी साझेदारी को जारी रखने के लिए नवीनीकरण की संभावना के साथ एमओयू एक वर्ष तक प्रभावी रहेगा। दोनों संस्थान इन सत्रों से अपने समुदायों पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभाव के लिए तत्पर हैं और इस सहयोग की सफलता के लिए प्रतिबद्ध हैं।